SALCO
South Asian Legal Clinic of Ontario

कैनेडा में निर्णय लेने की जिम्मेदारी (डिसिज़न-मेकिंग) और पालन-पोषण का समय (पेरैंटिंग-टाइम)

(इसे कस्टडी और ऐक्सेस/विज़िटेशन कहा जाता था)

यदि दो माता-पिता एक साथ नहीं रहने का निर्णय लेते हैं, तो उनके लिए यह निर्णय लेना जरूरी है कि:

- उनके बच्चों के बारे में महत्वपूर्ण निर्णय कौन लेगा
- प्रत्येक माता-पिता के साथ बच्चे कितना समय व्यतीत करेंगे (एक बच्चे को माता-पिता दोनों के साथ नहीं रहना पड़ता है लेकिन वो प्रत्येक माता-पिता के साथ समय बिता सकता है)

इन दो मुद्दों को कानूनी तौर पर निर्णय लेने की जिम्मेदारी (जिसे कस्टडी कहा जाता था) और पालन-पोषण का समय (ऐक्सेस या विज़िटेशन कहा जाता था) के रूप में जाना जाता है।

अगर दो माता-पिता विवाहित हैं और तलाक ले रहे हैं, तो उनके अधिकार और जिम्मेदारियां डिवोर्स ऐक्ट के तहत होंगी, जो कि एक फेडरल कानून है।

यदि दो माता-पिता विवाहित नहीं हैं, या वे तलाक नहीं चाहते हैं, तो उनके अधिकार और उत्तरदायित्व प्रांतीय कानून के अधीन होंगे। ओंटैरियो में यह फैमिली लॉ ऐक्ट है।

निर्णय लेने की जिम्मेदारी(डिसिज़न-मेकिंग)

निर्णय लेने की जिम्मेदारी क्या है?

- स्वास्थ्य, शिक्षा, संस्कृति, भाषा, धर्म और महत्वपूर्ण एक्सट्राकरिक्युलर गतिविधियों के बारे में निर्णय सहित बच्चे की भलाई के बारे में महत्वपूर्ण निर्णय लेने की जिम्मेदारी

निर्णय लेने की जिम्मेदारी या तो अदालत के आदेश या माता-पिता के बीच एक समझौते द्वारा निर्धारित की जा सकती है।

निर्णय लेने की जिम्मेदारी के प्रकार:

1. निर्णय लेने की एकल जिम्मेदारी - एक माता या पिता को दूसरे माता या पिता की सहमति या भागीदारी के बिना बच्चों के बारे में सभी महत्वपूर्ण निर्णय लेने का अधिकार है, जब तक कि समझौते या अदालत के आदेश में कुछ और न कहा गया हो।

2. निर्णय लेने की संयुक्त जिम्मेदारी - दोनों माता-पिता बच्चों के बारे में महत्वपूर्ण निर्णय लेने का अधिकार साझा करते हैं, और दोनों माता-पिता निर्णय लेने में शामिल रहते हैं।

3. वास्तविक रूप से (De facto) निर्णय लेने की जिम्मेदारी - एक माता या पिता बाहर चला जाता है और जो माता या पिता अभी भी बच्चों के साथ रह रहे हैं, उनके पास स्वत: निर्णय लेने की जिम्मेदारी होती है जब तक कि अदालत यह तय नहीं करती कि स्थायी रूप से निर्णय लेने की जिम्मेदारी किसकी होगी। वास्तव में निर्णय लेने की जिम्मेदारी होने का मतलब है कि दूसरे माता या पिता ने इस व्यवस्था को स्वीकार कर लिया है। यह निर्णय लेने की एकल जिम्मेदारी से अलग है क्योंकि कोई कानूनी व्यवस्था नहीं है।

पालन-पोषण का समय (पेरैंटिंग-टाइम)

पालन-पोषण का समय क्या है?

• वो समय जो बच्चे माता या पिता के साथ बिताते हैं
• बच्चे को शारीरिक रूप से माता या पिता की उपस्थिति में होने की आवश्यकता नहीं है। उदाहरण के लिए, यदि माता या पिता के पास स्कूल के दिन बच्चे के साथ समय होता है, तो बच्चा स्कूल में जो समय बिताता है, वह उस माता-पिता के समय में आता है। पालन-पोषण के समय में बच्चे के बारे में दिन-प्रतिदिन निर्णय लेने का अधिकार भी शामिल है, जबकि बच्चा माता या पिता के साथ है, जैसे कि भोजन, सोने का समय आदि। माता या पिता को अपने बच्चे की भलाई के बारे में जानकारी जानने का अधिकार होगा
• पालन-पोषण का समय या तो अदालत के आदेश या माता-पिता के बीच एक समझौते द्वारा निर्धारित किया जा सकता है

SALCO
South Asian Legal Clinic of Ontario

पालन-पोषण के समय की व्यवस्था के प्रकार:

1. पालन-पोषण का साझा समय - दोनों माता-पिता अपने बच्चे के साथ बिताए गए समय की मात्रा को साझा करते हैं। इसका मतलब है कि बच्चा प्रत्येक माता या पिता के साथ कम से कम 40% समय बिताता है।

2. पालन-पोषण का विभाजित (Split) समय - माता या पिता के एक से अधिक बच्चे होते हैं और प्रत्येक माता या पिता कम से कम एक बच्चे के साथ अधिकांश समय (60% से अधिक) बिताते हैं।

3. पालन-पोषण का पर्यवेक्षित (Supervised) समय - जब माता या पिता अपने बच्चों के साथ समय बिताते हैं तो किसी और का उपस्थित होना अनिवार्य है। यह आमतौर पर तब होता है जब विज़िटों के दौरान सुरक्षा संबंधी चिंताएँ होती हैं।

यदि दोनों माता-पिता निर्णय लेने की जिम्मेदारी और पालन-पोषण के समय की व्यवस्था पर सहमत हैं, तो वे:

• पालन-पोषण योजना का मसौदा तैयार कर सकते हैं जो उनके अनौपचारिक समझौते की रूपरेखा देती है या
• पालन-पोषण योजना को उनके अलगाव समझौते में शामिल कर सकते हैं जिसे अदालत में फाइल किया जा सकता है या
• अदालती आदेश प्राप्त कर सकते हैं (यदि अदालती प्रक्रिया पहले ही शुरू हो चुकी है)

यदि दोनों माता-पिता निर्णय लेने की जिम्मेदारी और पालन-पोषण योजना की व्यवस्था पर सहमत नहीं होते हैं, तो वे:

• सभी लंबित मुद्दों को जज के सामने हल करने के लिए अदालत जा सकते हैं। न्यायाधीश तब एक पालन-पोषण आदेश जारी करेगा। यह आदेश बच्चे के संबंध में निर्णय लेने की जिम्मेदारी या पालन-पोषण के समय की व्यवस्था को निर्धारित करेगा

यह तय करते समय कि निर्णय लेने की जिम्मेदारी किसकी होनी चाहिए, और वे प्रत्येक माता या पिता के साथ कितना समय व्यतीत करेंगे, अदालत बच्चे के सर्वोत्तम हितों पर विचार करेगी और निम्नलिखित कारकों पर ध्यान देगी:

- बच्चे की स्थिरता की आवश्यकता
- प्रत्येक माता या पिता के साथ बच्चे का रिश्ता
- बच्चे की देखभाल का इतिहास
- बच्चे के विचार और प्राथमिकताएँ
- बच्चे का धर्म और संस्कृति
- कोई पारिवारिक हिंसा

निर्णय लेने की जिम्मेदारी और पालन-पोषण के समय की व्यवस्था को बदलना

अगर माता-पिता के बीच निजी तौर पर समझौता किया गया था:

- वे एक नया समझौता कर सकते हैं और सहमत हो सकते हैं कि पुराना समझौता अब मान्य नहीं है

- यदि वे परिवर्तनों पर सहमत नहीं हो सकते हैं, तो वे मध्यस्थता जैसी विवाद समाधान विधि के माध्यम से इसे अदालत से बाहर हल करने का प्रयास कर सकते हैं, या वे अदालत में जा सकते हैं (यदि उन्होंने अदालत में समझौता फाइल किया है)

अगर माता-पिता को अदालत का आदेश मिला है:

- यदि वे परिवर्तनों पर सहमत नहीं हैं, तो उन्हें पिछले आदेश को "तबदील करने" (बदलने) के लिए न्यायालय में आवेदन करना होगा। उन्हें अदालत में यह साबित करना होगा कि पिछले आदेश के बाद से बच्चे की परिस्थितियों में बदलाव आया है

- यदि वे परिवर्तनों पर सहमत हैं, तो वे अदालत में नया समझौता प्रस्तुत कर सकते हैं और अदालत से इसे "सहमति आदेश" (“consent order”) नामक आदेश में डालने के लिए कह सकते हैं।